कैसी होगी शिक्षा 2025 में?

शशि प्रभा *

आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में तेज़ी से हो रहे बदलाव, शिक्षा की विचारधारा में हो रहे झुकाव और अन्य कई कारणों को देखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली चुनौतियों एवं परिवर्तन के लिए अभी से तैयारी करने की आवश्यकता है। वर्ष 2025 में शिक्षा कैसी होगी, यहाँ इससे जुड़ी कुछ आशाएँ व्यक्त की गई हैं। साथ ही ऐसी शिक्षा कैसे संभव हो, इस पर कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं। यह तो सही है कि समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा में निरंतर निखार लाया जाता रहा है, किंतु वैश्विक परिवेश को देखते हुए हमें आज शिक्षा में सुधार ही नहीं नवाचार भी लाना होगा। बदलाव एक जगह नहीं, अपितु शिक्षा से संबंधित सभी मुद्दों पर लाने होंगे एवं शिक्षा के सभी हिस्सेदारों को आपस में विचार-विमर्श कर अपना-अपना उत्तरदायित्व स्पष्ट तौर पर पहचानना होगा और बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए भविष्योन्मुखी शिक्षा की तैयारी में अभी से तत्परता पूर्ण जुट जाना होगा।

हमारे सुनहरे भविष्य के लिए शिक्षा एक बड़ी आशा है, क्योंकि शिक्षा में स्वतंत्र चिंतन, विवेकशीलता, आविष्कारिता तथा समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने की सामर्थ्य है। आज सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में इतनी तेज़ी से प्रगति हो रही है कि हमें आने वाले दशक में शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली चुनौतियों एवं परिवर्तनों के लिए अभी से तैयारी करने की आवश्यकता है। यदि सोचें तो वर्ष 2025 बहुत दूर लग सकता है लेकिन ज़रा ध्यान दें तो आज जो बच्चे कक्षा एक में हैं वे ही वर्ष 2025 में कक्षा दस में पहुँच जाएँगे। भविष्य में होने वाली ज़रूरतों एवं समाज में हो रहे झुकाव के अनुसार और कार्य-क्षेत्र में होने वाली अनुमानित अपेक्षाओं के हिसाब से हमें अभी से तत्पर हो जाने की आवश्यकता है। सवाल तो यह है कि

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* डी. ई. एस. एम., एनसीईआरटी, नयी दिल्ली

हम कैसे जानें कि आने वाले समय में किस ज्ञान और कौशल की आवश्यकता होगी। फिर भी प्रौद्योगिकी में हो रहे तेज़ी से बदलाव एवं शिक्षा की विचारधारा में हो रहे झुकाव को देखते हुए हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं और उसके लिए सही दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

निम्नलिखित कारणों से शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव होने की संभावना दिखाई देती है—

- विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पहुँच।
- सीखने संबंधी सामग्रियों की बहुलता एवं आसानी से उपलब्धता।
- कार्य जगत में अधिकाधिक सहयोगात्मक कार्य की आवश्यकता।
- बच्चों का अपनी व्यक्तिगत रुचि अनुसार अपनी गति एवं शैली से सीखने की आवश्यकता को महसूस करना।

स्कूली शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की चुनौतियों एवं मुद्दों के बारे में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय नीति (2012) का विचार है कि इसकी मदद से शिक्षा में बहुप्रयोजन उपयोग संभव है। कंप्यूटर एवं इंटरनेट को मात्र सूचना वितरण युक्ति की तरह उपयोग करना इसकी क्षमता एवं सामर्थ्य का अल्प उपयोग है। यह अत्यावश्यक है कि अनेकरूपता लिए विविध अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर उपकरण (टूल) मीडिया तथा अंतर्क्रिया युक्ति विकसित और परिनियोजित की जाए जिससे शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को सृजनात्मकता, सौंदर्यपरकता, विश्लेषणात्मकता तथा समस्या सुलझाने की क्षमता तथा संवेदनशीलता में बढ़ावा मिले।[1]

भविष्य तो कैसा भी रुख ले सकता है लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में हम सुखद संभावनाओं पर सोच तो सकते हैं और सही समय पर उस दिशा में पूर्व कदम उठा सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में सभी मुद्दों पर विचार कर अभी से अनुकूल उपायों की ओर अग्रसर होने की आवश्यकता है। वर्ष 2025 में शिक्षा कैसी होगी, यहाँ इससे जुड़ी कुछ आशाएँ व्यक्त की गई हैं।

शिक्षार्थी

आने वाले समय में शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत रुचि, अधिगम की उनकी आवश्यकताओं, उनके रुझान एवं अधिगम शैली पर अधिक ध्यान दिया जा सकेगा। सभी विषयों में एक ही अवधारणा पर कई श्रव्य, दृश्य एवं लिखित, दत्त कार्य, वेबसाइट, प्रयोग, क्रियाकलाप, परियोजना, अनुरूपण प्रयोग, गेम उपलब्ध रहेंगे। शिक्षार्थी अपनी रुचि के अनुसार किसी भी दत्त कार्य का चयन कर सकेंगे। शिक्षार्थी वही पढ़ेंगे और उसी तरह पढ़ेंगे जिससे वे अपने शौक एवं इच्छा पूरी कर सकें एवं रुचि और जिज्ञासा को कायम रख सकें। गृहकार्य बच्चे स्कूल की साइट पर लॉग-इन करके कंप्यूटर पर करेंगे। दृश्य, श्रव्य एवं लिखित रूप में शिक्षण, अधिगम सामग्रियों को बनाने में शिक्षार्थियों का बड़ा योगदान रहेगा। शिक्षार्थी अपनी-अपनी वेबसाइट स्वयं बनाएंगे एवं उसे अप-टू-डेट करते रहेंगे। वेबसाइट पर विश्व के अन्य शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों से अंतःक्रिया करके स्व गति से अधिगम में संलग्न रहेंगे और अधिगम सामग्रियों का आदान-प्रदान कर अपने ज्ञान का निर्माण सक्रिय रूप से करेंगे।

शिक्षार्थी अपने अधिगम का उत्तरदायित्व स्वयं उठाना सीख जाएँगे। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही उद्देश्य नहीं रह जाएगा, बल्कि वे अपनी पसंद के विषय पर परियोजना कार्य करके सृजनात्मक रूप से अपनी अधिगम शैली के अनुसार विभिन्न अवधारणाओं को सीखेंगे। शिक्षार्थियों को इस बात का संतोष रहेगा कि वे अपनी प्रतिभा की पहचान कर उसका उपयोग कर रहे हैं। तथ्यगत सामग्रियों को याद रखने की क्षमता के बदले सीखते रहने की क्षमता, विवेचनात्मक चिंतन एवं समस्या समाधान की कुशलता पर ज़ोर दिया जाएगा।

शिक्षार्थी यह सीखने में सक्षम हो जाएँगे कि किसी समस्या को बहुविध दृष्टिकोण से कैसे देखा जा सकता है एवं उसे विविध तरीके से कैसे हल किया जा सकता है। वे विभिन्न विषयों से जुड़े वैश्विक मुद्दों से सरोकार रखेंगे, क्योंकि वे वैश्विक नागरिक बनना चाहेंगे। मोबाइल, स्मार्टफ़ोन, आईपैड आदि को विद्यालय में लाने की मनाही नहीं रहेगी। इन्हें शिक्षण अधिगम में बाधा के रूप में न देखकर, इसकी समृद्धि के लिए सहायक के रूप में देखा जाएगा।

शिक्षार्थी प्राइमरी कक्षा में ही एक्सेल, पावर प्वाइंट, आदि का प्रयोग करेंगे। ज्ञान को उपभोक्ता की तरह नहीं उपयोग करेंगे, बल्कि स्वयं ज्ञान के निर्माता बन जाएँगे। असफ़ल होना सामाजिक अपयश अथवा कलंक नहीं माना जाएगा, क्योंकि शिक्षार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक इस बात को समझ लेंगे कि असफ़लता नवाचार का पथ प्रदर्शित कर सकता है। शिक्षार्थी आकलन के लिए अपने इलेक्ट्रॉनिक पोर्टफ़ोलियो का रख-रखाव करेंगे। उन्हें इस बात की स्वतंत्रता होगी कि अपनी समझ को जैसे चाहे व्यक्त करें। बोलकर, लिखकर, प्रयोग करके, परियोजना करके, अर्थात् शिक्षक आकलन के लिए बहुविध तरीकों का प्रयोग करेंगे। शिक्षार्थी कंप्यूटर के आगे अपनी आवाज़ को रिकॉर्ड कराकर परीक्षा दे सकेंगे। उनका आंकलन परियोजना पर आधारित एवं वास्तविक जगत से जुड़ा होगा। जीवनपर्यंत अधिगमकर्ता बने रहने के लिए शिक्षार्थी सही संदर्भ में सही प्रश्न गढ़ना एवं पूछना सीखकर अधिगम के विविध संसाधनों को खोजना, आकलन करना और उनका उपयोग करना सीख जाएँगे।

शिक्षक

प्रौद्योगिकी शिक्षक को कभी भी विस्थापित नहीं कर सकती। शिक्षक इस तरह से प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे कि वे आई.सी.टी. के प्रयोग से विद्यार्थियों के अधिगम पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे सकें। शिक्षण अधिगम में नवाचार एक अपवाद नहीं रहेगा, बल्कि यह एक नियमित चर्या बन जाएगी। असंसाधित जानकारी को सरल बनाना शिक्षकों का बड़ा उत्तरदायित्व रहेगा। वे शिक्षार्थियों में सीखते रहने की क्षमता विकसित करेंगे और परियोजना आधारित अधिगम पर ध्यान देंगे, जहाँ शिक्षार्थी अपनी जिज्ञासानुसार अपना प्रश्न स्वयं बनाएँगे, समस्या की पहचान करेंगे, हल और समाधान स्वयं खोजेंगे, विशेषज्ञों से बातचीत करेंगे, प्रयोग करेंगे, दृश्य-क्लिप बनाएँगे और फ़ाइनल रिपोर्ट बनाकर अन्य शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों से साझा करेंगे। आज से दस वर्ष पश्चात् शिक्षा बच्चों को किसी मुद्दे पर सुविचारित चयन करने एवं सुविचारित निर्णय लेने में अधिक सक्षम बनाएगी।

शिक्षक इस बात को आत्मसात् कर लेंगे कि सभी शिक्षार्थियों की अधिगम आवश्यकताएँ अलग-अलग हैं और वे भिन्न प्रकार से सीखते हैं। वे इस धारणा को पूर्णतः नकार देंगे कि सभी बच्चे समान रूप से सीखते हैं। वे पाठ योजना (लेसन प्लान) बनाने के बजाए, शिक्षार्थियों के लिए अधिगम योजना (लर्निंग प्लान) बनाएँगे।

कार्यरत-प्रशिक्षण विशेष क्षेत्र में उनकी आवश्यकतानुसार आयोजित की जाएगी। टॉप-डाउन तरीके से प्रशिक्षण नहीं होगा। शिक्षक अधिगम के विविध मुक्त संसाधनों से किसी भी विषय के विविध अवधारणाओं पर विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण लेते रहेंगे। विभिन्न स्कूल के शिक्षक आपस में अधिकाधिक जुड़े रहकर क्रियात्मक शोध एवं शिक्षण-अधिगम से संबंधित मुद्दों एवं समस्याओं पर अंतःक्रिया करते रहेंगे। शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों की मदद से शिक्षार्थियों के पोर्टफ़ोलियो का रख-रखाव करके उनका सतत एवं समग्र आकलन करते रहेंगे। शिक्षक अपने विषय संबंधित शिक्षण-अधिगम सामग्रियों की अपनी वेबसाइट बनाएँगे और शिक्षार्थियों के साथ ब्लॉग पर परिचर्चा करते रहेंगे।

शिक्षक का प्रमुख दायित्व शिक्षार्थियों को सूचना साक्षर बनाना, विभिन्न सूचनाओं तक पहुँच बनाकर आकलन करके सही सूचना को सही जगह उपयोग करते हुए उन्हें ज्ञान एवं समझ में रूपांतरित करने में सक्षम बनाना होगा। वे शिक्षार्थियों में विवेचनात्मक सोच, संप्रेषण कौशल, सहयोगात्मक कार्य करने की क्षमता, दल भावना, सक्रिय सहभागिता, समस्या समाधान, सृजनात्मकता, नवाचारिता के कौशल में विकास करने के लिए उन्हें बहुविध रूप से अधिगम में व्यस्ततम रखेंगे। उनकी सृजनात्मकता को विकसित करने के लिए अनुभव-जन्य अधिगम को प्रोत्साहित करेंगे।

शिक्षक शिक्षार्थियों के समक्ष ज्ञान को पुनः प्रस्तुत करने के बजाय, उनकी जिज्ञासा को पोषित करके उनका पथ प्रदर्शित करेंगे, जिससे शिक्षा अधिक अर्थपूर्ण हो सके। वे उन्हें यह बताने के बदले कि क्या पढ़ना है, कैसे पढ़ना है, शिक्षार्थियों को चयन एवं विकल्प प्रस्तुत करेंगे, जिससे वे अपने ज्ञान एवं बोध का अनुप्रयोग कर सकें। शिक्षार्थियों के आकलन में उनकी उपलब्धियों के अतिरिक्त उनकी अधिगम प्रवृत्तियों, स्वतंत्रतापूर्वक स्वयं सीखने की योग्यता, समस्या समाधान की कुशलता भी शामिल होगी। शिक्षक की प्राथमिकता एवं उनका प्रमुख दायित्व शिक्षार्थियों को सीखने के लिए स्वः प्रेरित करना एवं उनमें सीखते रहने की क्षमता विकसित कर जीवनपर्यंत अधिगमकर्ता बनाना होगा।

शिक्षार्थियों के आकलन के लिए अभिभावक का सहयोग प्राप्त कर स्कूल में वे कॉंफ्रेंस का आयोजन करेंगे।

कार्यरत शिक्षकों के लिए निरंतर क्षमता विकास कार्यक्रमों के साथ ही सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में भी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को इस प्रकार समेकित करना होगा जिससे आगे जाकर वह शिक्षण-अधिगम माहौल को शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत रुचि, पसंद, क्षमता एवं अधिगम आवश्यकतानुसार समृद्ध बना सकें। शैक्षिक तकनीकी का आधार-पत्र (2009) स्कूल व्यवस्था

के लिए विशेष प्रस्ताव के अंतर्गत यह सुझाव देती है कि सेवा-पूर्व शिक्षक-प्रशिक्षण के दौरान—

- शिक्षकों को उन लचीले मॉडलों से परिचित कराया जाए जो पाठ्यक्रमों के लक्ष्यों तक पहुँचने में सक्षम हों।
- मीडिया और तकनीकी के माध्यमों से होने वाले अध्ययन पद्धतियों से परिचित करवाया जाए ताकि शिक्षक के शिक्षण-अधिगम के कार्यक्रमों का यह एक अभिन्न अंग बन सके।
- शिक्षकों को अधिगम प्रक्रिया में उपलब्ध सामग्रियों का मूल्यांकन और उनका समेकन करने का प्रशिक्षण दिया जाए।
- प्रशिक्षणरत शिक्षकों को ज्ञान के स्रोतों को ढूंढ़ने और ज्ञान का सृजन करने की दिशा में प्रशिक्षित किया जाए।[2]

विद्यालय

कालांश एक बँधे हुए समय तक नहीं रहेगा, लचीला रहेगा। बच्चों को अपनी रुचि अनुसार विषय या संकल्पना पर अपनी समझ विकसित करने के लिए स्कूल की समय-सारणी में एक कालांश अलग से रहेगा।

पूरा स्कूल वाई-फ़ाई रहेगा। शिक्षार्थी मोबाइल, स्मार्टफ़ोन, टैबलेट, आईपैड आदि का अधिगम में समृद्धि लाने के लिए सही प्रयोग करना सीख जाएँगे। सभी बच्चों के हाथ में मोबाइल, स्मार्टफ़ोन, टैबलेट, आईपैड रहेगा, किताबें नहीं। किताबें डिजिटल हो जाएँगी। 7 नवंबर 2015 को लांच किए गए ई-पाठशाला कार्यक्रम द्वारा डिजिटल किताबों एवं शिक्षण-अधिगम सामग्रियों की शुरुआत हो गई है। बच्चों की उपस्थिति बायो स्कैन से होगी। स्कूल ग्रीन बिल्डिंग में परिवर्तित हो जाएँगे। कागज़ का प्रयोग कम से कम होगा। अधिकतर कार्य आई.सी.टी. से होगा। कंप्यूटर रूम अलग से नहीं रहेंगे। शिक्षार्थी सभी विषयों को आई.सी.टी. से समेकित करके पढ़ेंगे।

कक्षा में अधिकाधिक सहयोगात्मक कार्य होगा। बैठने की व्यवस्था इस प्रकार रहेगी जिससे सहयोगात्मक कार्य की सुविधा रहे। कक्षा ऐसी नहीं होगी जहाँ बच्चे पंक्तिबद्ध होकर बैठें। अभिभावक कभी भी कक्षा में आ सकेंगे। कक्षा में अपनी इच्छानुसार शिक्षण-अधिगम में योगदान भी देंगे। कई अभिभावक अपनी नौकरी घर पर ही रहकर करेंगे (वर्किंग फ्रॉम होम) जिससे अपने बच्चों के लिए अधिक समय निकाल पाएँगे। समुदाय एवं विद्यालय के बीच दूरियाँ घटेंगी। बच्चे विभिन्न प्रयोग, क्रियाकलापों को करते हुए उसे कंप्यूटर और मोबाइल द्वारा रिकॉर्डिंग करेंगे और सहपाठियों एवं शिक्षकों से साझा कर अंतःक्रिया करते रहेंगे। शिक्षार्थी शिक्षक से अधिकाधिक ऑनलाइन अंतःक्रिया करेंगे। अधिगम समिश्रित तरीके से (लेंडिड) होगी।

स्कूल की पत्रिका और समाचार-पत्र, ई-प्रकाशित होंगे। आज शिक्षा के कई मुक्त स्रोत तो हैं ही हो सकता है कि भविष्य में कोई और प्रौद्योगिकी विकसित हो जाए जो शिक्षण-अधिगम को और सरल बना दे। बच्चों की रुचि शिक्षा में लगाए रखने के लिए प्रौद्योगिकी सहायक होगी।

पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या 'थीम' पर आधारित होगी। प्रत्येक 'थीम' अंतर्विषयक रहेंगे जो अन्वेषण, परियोजना कार्य एवं समस्या समाधान करने पर आधारित होंगे। अधिकतर शैक्षिक संसाधन मुफ्त में उपलब्ध रहेंगे। शिक्षार्थी संकल्पनाओं को संबंधित संदर्भ से जोड़ते हुए गहराई से अध्ययन करेंगे। वे अपने विषय बताने के बदले अपना मिशन बताएँगे— जैसे कि मैं स्पेस शटल बनाने के लिए भौतिकी पढ़ रहा ही/हूँ , मैं जीव विज्ञान पढ़ रहा ही/हूँ यह जानने के लिए कि क्या किया जाए जिससे दुनिया में कोई भी भूखा नहीं रहे, मैं रसायन विज्ञान पढ़ रहा ही/हूँ यह जानने के लिए कि ऐसी सामग्री कैसे बनाई जाए जिसे पहनने से हम पर मौसम का कोई असर न हो अर्थात् ठंड में ठंडी और गरमी में गरमी न लगे। पाठ्यचर्या ज़्यादा से ज़्यादा रोज़मर्रा की ज़िंदगी से संबंधित होगी एवं उनमें विविधता और लचीलापन आधारभूत रूप से रहेंगे। शिक्षण-अधिगम के हर कदम पर विविधता ही मुख्य आधार और दृष्टिकोण रहेंगे। विविध पाठ्यचर्या बनाने की आवश्यकता होगी, जिन्हें विविध तरीकों से आदान-प्रदान किया जा सके। शिक्षार्थियों को अधिगम में लगाये रखने के लिए उनकी रुचि अनुसार विविध उपागमों के बारे में पहले से विचार करना होगा और निरूपण के साथ-साथ आकलन के विविध तरीकों पर विचार करना होगा। शिक्षार्थी जैसे भी चाहें अपनी समझ को व्यक्त कर सकेंगे। पाठ्यचर्या निर्माण सिर्फ कुछ लोगों द्वारा नहीं, बल्कि समूह द्वारा किए जाएँगे, जिसमें शिक्षार्थी भी सम्मलित रहेंगे।

विशेष शैक्षिक आवश्यकता वाले शिक्षार्थी अपनी अधिगम आवश्यकताओं के अनुसार बड़ी आसानी से अपनी पाठ्यचर्या का चुनाव कर सकेंगे। वे अपनी आवाज़ से ही कंप्यूटर को कंमाड दे सकेंगे। विभिन्न विषयों पर ब्रेल एवं बोलने वाली पुस्तक (टॉकिंग बुक) उपलब्ध रहेंगी। कंप्यूटर ब्रेल प्रिंटर स्क्रीन रीडर एवं विभिन्न भाषा के सॉफ़्टवेयर से युक्त रखे जाएँगे। प्रौद्योगिकी के उपयोग से इन शिक्षार्थियों की अधिगम समृद्धि के लिए शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करते रहेंगे।

कालांश अधिक लंबे होंगे। बच्चे घंटी का इंतज़ार नहीं करेंगे। रोज़ या सप्ताह की योजना बनेगी। समय-सारणी में लचीलापन रहेगा। विभिन्न विषयों पर शैक्षिक वीडियो गेम्स एवं विज्ञान और गणित में वर्चुअल लैबोरेटरी, उपलब्ध रहेंगी। बच्चे अपने अनुभवों को अपनी समझ के अनुसार व्याख्या करके अपने ज्ञान का निर्माण सक्रिय रूप से करते रहेंगे।

ऐसी शिक्षा कैसे संभव हो

प्रश्न यह पैदा होता है कि इन विचारों को वास्तविकता में कैसे परिवर्तित किया जाए। बदलाव एक जगह नहीं, अपितु शिक्षा से संबंधित सभी मुद्दों पर लाने होंगे एवं शिक्षा के सभी हिस्सेदारों की भूमिका परिभाषित करनी होगी।

प्रथम, स्कूल अगले दशक पर दूरदृष्टि रखते हुए अपना लक्ष्य निर्धारण कर शिक्षा 2025 की योजना बनाए। 1 जुलाई 2015 को भारत सरकार ने एक महत्वाकांक्षी योजना डिजिटल इंडिया की शुरुआत की है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाले नौ क्षेत्रों

में से एक क्षेत्र ब्रॉडबैंड, हाइवे है जिस पर खास ध्यान दिया जाएगा। ब्रॉडबैंड हाइवे से गुणवत्ता की शिक्षा भारत के दूरस्थ हिस्से में भी पहुँच सकेगी।[3] भारत सरकार का शिक्षा के सार्वभौमीकरण के उद्देश्य से बने सर्व शिक्षा अभियान में भी शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय, हर एक स्कूल में प्रौद्योगिकी के विभिन्न संसाधनों के साथ-साथ पर्याप्त एवं प्रशिक्षित मानव संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। विद्यालयों में नियमित पावर सप्लाई एवं इंटरनेट कनेक्शन की मूलभूत आवश्यकता है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न संसाधनों को फलोत्पादक रूप से उपयोग करने के लिए शिक्षकों की क्षमता विकसित की जाए। ये संसाधन ऐसे हों जो मात्र सूचना ही प्रदान नहीं करें, बल्कि शिक्षार्थियों को यथोचित फ़ीडबैक देकर उन्हें विभिन्न अंतर्क्रियाओं द्वारा अधिगम में व्यस्त रखें। साथ ही इन संसाधनों में शिक्षार्थियों के विभिन्न कौशल के प्रत्यक्ष अभ्यास का भी प्रावधान हो।[4] इसके लिए विभिन्न गैर-सरकारी संस्थान एवं सॉफ़्टवेयर कंपनियों से सहयोग किया जा सकता है।

तीसरा मुद्दा इन योजनाओं को अमल में लाए जाने का है। यह सुनिश्चित किया जाए कि योजनाओं का कार्यान्वयन सही रूप से हो रहा है। इसके लिए देश के विभिन्न राज्यों, केंद्र प्रशासित क्षेत्रों, जिलों एवं ब्लॉक में सतत मॉनीटर करना होगा। शिक्षा से संबंधित मुद्दों एवं चुनौतियों पर आपस में विचार-विमर्श करने होंगे। समाज के सभी वर्गों को ऐसी गुणवत्ता की शिक्षा मिले इसके लिए दिशा-निर्देश एवं मापदंड बनाने जैसे ठोस कदम उठाने होंगे।

यह आवश्यक है कि हम ऐसे मानव संसाधन विकसित करें जो वेतन भोगी कार्मचारी बनने के बदले स्व-उद्यमी बनें और समाज में रोज़गार पैदा करें। जहाँ आपसी व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्वता नहीं हो, दल भावना से समूह में कार्य करें, जहाँ ज्ञान को टुकड़ों के रूप में नहीं देखें, समग्र रूप से देखें। हमें वर्कर नहीं विचारक बनाना है।

प्रौद्योगिकी में इतनी तेज़ी से प्रगति हो रही है कि संभावित है बच्चे ऐसे उपकरण और यंत्र प्रयोग में लाएँगे, जिनका अभी आविष्कार भी नहीं हुआ है, बच्चे ऐसे सवालों के जवाब ढूँढेंगे, जिनके बारे में अभी किसी ने सोचा भी नहीं है।

आज हम ज्ञान आधारित समाज में रह रहे हैं जहाँ ज्ञान अपरिमित रूप में उपलब्ध है। प्रासंगिक ज्ञान को सही जगह और सही समय पर समाज के हित में उपयोग करना स्व-पोषित समाज के लिए आवश्यक है। यह तो सही है कि समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा में निरंतर निखार लाया जाता रहा है किंतु वैश्विक परिवेश को देखते हुए हमें आज शिक्षा में सुधार ही नहीं नवाचार भी लाना होगा। ऐसे कार्यक्रम अभ्यास एवं नीतियाँ ही सफ़ल होंगी जो शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत रुचि और समझ को प्रोत्साहित कर सकें।

ये विचार अभी अविश्वसनीय लग सकते हैं किन्तु अकल्पनीय नहीं। यदि अभी से हम कार्य करना शुरू करें तो हमारे सपने सच्चे हो सकते हैं। बदलाव तो अवश्य आएगा। सभी जगह एक साथ नहीं धीरे-धीरे आएगा।

इसके लिए शिक्षा के सभी हिस्सेदारों को आपस में मिलकर विचार-विमर्श करना होगा एवं अपना-अपना उत्तरदायित्व, स्पष्ट तौर पर पहचानना होगा। यह अति आवश्यक है कि हम बदलते परिवेश में बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए भविष्योन्मुखी शिक्षा की तैयारी में अभी से तत्परतापूर्ण जुट जाएँ।

टिप्पणी

[1] मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. 2012. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग. *स्कूली शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) पर राष्ट्रीय नीति*. पृ. 3-5.

[2] एन.सी.ई.आर.टी. 2009. *शैक्षिक तकनीकी — राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र*. पृ. 17. नयी दिल्ली.

[3] www.amarujala.com/feature/samachar/national/pm-modi-launched-digital-india-campaign-hindi-news-rs/

[4] एन.सी.ई.आर.टी. 2013. *पेडागॉजी ऑफ़ साइंस — फ़िज़िकल साइंस (भाग 2)*. पृ. 326. नयी दिल्ली.